

नवरात्रि : स्रोत की ओर एक यात्रा

- पुर्णिमा शाह

“श्री श्री रवि शंकर”

नवरात्रि का त्यौहार अश्विन (शरद) या चैत्र (बसंत) की शुरुआत में प्रार्थना और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह काल आत्म निरीक्षण और अपने स्रोत की ओर वापस जाने का समय है। परिवर्तन के इस काल के दौरान, प्रकृति भी पुराने को झाड़ कर नवीन हो जाती है; जानवर सीतनिद्रा में चले जाते हैं और बसंत के मौसम में जीवन वापस नए सिरे से खिल उठता है।

वैदिक विज्ञान के अनुसार, पदार्थ अपने मूल रूप में वापस आकर फिर से बार बार अपनी रचना करता है। यह सृष्टि सीधी रेखा में नहीं चल रही है बल्कि वह चक्रीय है, प्रकृति के द्वारा सभी कुछ का पुनर्नवीनीकरण हो रहा है- कायाकल्प की यह एक सतत प्रक्रिया है। तथापि सृष्टि के इस नियमित चक्र से मनुष्य का मन पीछे छूटा हुआ है। नवरात्रि का त्यौहार अपने मन को वापस अपने स्रोत की ओर ले जाने के लिए है।

उपवास, प्रार्थना, मौन और ध्यान के माध्यम से जिज्ञासु अपने सच्चे स्रोत की ओर यात्रा करता है। रात को भी रात्रि कहते हैं क्योंकि वह भी नवीनता और ताजगी लाती है। वह हमारे अस्तित्व के तीन स्तरों पर राहत देती है- स्थूल शरीर को, सूक्ष्म शरीर को, और कारण शरीर को। उपवास के द्वारा शरीर विषाक्त पदार्थ से मुक्त हो जाता है, मौन के द्वारा हमारे वचनों में शुद्धता आती है और बातूनी मन शांत होता है, और ध्यान के द्वारा अपने अस्तित्व की गहराइयों में डूबकर हमें आत्मसाक्षात्कार मिलता है।

यह आंतरिक यात्रा हमारे बुरे कर्मों को समाप्त करती है। नवरात्रि आत्मा अथवा प्राण का उत्सव है। जिसके द्वारा ही महिषासुर (अर्थात् जड़ता), शुम्भ-निशुम्भ (गर्व और शर्म) और मधु-कैटभ (अत्यधिक राग-द्वेष) को नष्ट किया जा सकता है। वे एक-दूसरे से पूर्णतः विपरीत हैं, फिर भी एक-दूसरे के पूरक हैं। जड़ता, गहरी नकारात्मकता और मनोग्रस्तियाँ (रक्तबीजासुर), बेमतलब का वितर्क (चंड-मुंड) और धुंधली दृष्टि (धूमलोचन) को केवल प्राण और जीवन शक्ति ऊर्जा के स्तर को ऊपर उठाकर ही दूर किया जा सकता है।

नवरात्रि के नौ दिन तीन मौलिक गुणों से बने इस ब्रह्मांड में आनन्दित रहने का भी एक अवसर है। यद्यपि हमारा जीवन इन तीन गुणों के द्वारा ही संचालित है, हम उन्हें कम ही पहचान पाते हैं या उनके बारे में विचार करते हैं। नवरात्रि के पहले तीन दिन तमोगुण के हैं, दूसरे तीन दिन रजोगुण के और आखिरी तीन दिन सत्त्व के लिए हैं। हमारी चेतना इन तमोगुण और रजोगुण के बीच बहती हुई सतोगुण के आखिरी तीन दिनों में खिल उठती है। जब भी जीवन में सत्त्व बढ़ता है, तब हमें विजय मिलती है। इस ज्ञान का सारतत्व जश्न के रूप में दसवें दिन विजयादशमी द्वारा मनाया जाता है।



यह तीन मौलिक गुण हमारे भव्य ब्रह्मांड की स्त्री शक्ति माने गए हैं। नवरात्रि के दौरान देवी माँ की पूजा करके, हम त्रिगुणों में सामंजस्य लाते हैं और वातावरण में सत्त्व के स्तर को बढ़ाते हैं।

हालाँकि नवरात्रि बुराई पर अच्छाई की विजय के रूप में मनाई जाती है, परंतु वास्तविकता में यह लड़ाई अच्छे और बुरे के बीच में नहीं है। वेदांत की दृष्टि से यह द्वाैत पर अद्वाैत की जीत है। जैसा अष्टावक्र ने कहा था, बेचारी लहर अपनी पहचान को समुद्र से अलग रखने की लाख कोशिश करती है, लेकिन कोई लाभ नहीं होता।

हालाँकि इस स्थूल संसार के भीतर ही सूक्ष्म संसार समाया हुआ है, लेकिन उनके बीच भासता अलगाव की भावना ही द्वंद का कारण है। एक ज्ञानी के लिए पूरी सृष्टि जीवंत है जैसे बच्चों को सबमें जीवन भासता है ठीक उसी प्रकार उसे भी सब में जीवन दिखता है। देवी माँ या शुद्ध चेतना ही सब नाम और रूप में व्याप्त हैं। हर नाम और हर रूप में एक ही देवत्व को जानना ही नवरात्रि का उत्सव है। अतः आखिर के तीन दिनों के दौरान विशेष पूजाओं के द्वारा जीवन और प्रकृति के सभी पहलुओं का सम्मान किया जाता है।

काली माँ प्रकृति की सबसे भयानक अभिव्यक्ति हैं। प्रकृति सौंदर्य का प्रतीक है, फिर भी उसका एक भयानक रूप भी है। इस द्वाैत यथार्थ को मानकर मन में एक स्वीकृति आ जाती है और मन को आराम मिलता है।

देवी माँ को सिर्फ बुद्धि के रूप में ही नहीं जाना जाता, बल्कि भ्राँति के रूप में भी; वह न सिर्फ लक्ष्मी (समृद्धि) हैं, वह भूख (क्षुधा) भी हैं और प्यास (तृष्णा) भी हैं। सम्पूर्ण सृष्टि में देवी माँ के इस दोहरे पहलू को पहचान कर एक गहरी समाधि लग जाती है। यह पच्छिम की सदियों पुरानी चली आ रही धार्मिक संघर्ष का भी एक उत्तर है। ज्ञान, भक्ति और निष्काम कर्म के द्वारा अद्वाैत सिद्धि प्राप्त की जा सकती है अथवा इस अद्वाैत चेतना में पूर्णता की स्थिति प्राप्त की जा सकती है। ■

बटेर की दुम क्यों नहीं होती

जापानी लोककथा “उजुरा तो तनुकि” का हिंदी में अनुवाद - सुरेश ऋतुपर्ण

एक जंगल में एक बिज्जू और बटेर रहते थे। वे दोनों दोस्त तो नहीं थे लेकिन पड़ोसी होने के नाते एक दूसरे से परिचित थे। कभी-कभी रास्ते में आते-जाते दुआ-सलाम हो जाया करती थी। ऐसे ही एक दिन बटेर दाने-पानी की तलाश में निकली तो उसने सड़क किनारे बड़ी चहल पहल देखी। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि आज क्या बात है कि बाज़ार में इतनी भीड़ दिखाई दे रही है। उसने पास से गुज़रती चिड़िया से पूछा- “सुनो! आज यहाँ इतनी चहल पहल क्यों है?” चिड़िया ने ज़रा इतराते हुए कहा- “अरे! तुम्हें इतना भी नहीं मालूम। आज राजा की सवारी निकलने वाली है। सब लोग उसे देखने के लिये इकट्ठे हो रहे हैं। मैं तो पेड़ के ऊपर बैठ कर राजा की सवारी देखने का आनन्द लूँगी।” इतना कहकर वह चिड़िया उड़ गई और पेड़ की सबसे ऊँची फुनगी पर जाकर बैठ गई। बटेर ने सोचा कि वह तो इतनी ऊँचाई पर कभी जा ही नहीं सकती। इसलिए राजा की सवारी वह नहीं देख पाएगी। वह कुछ मायूस-सी हो गई।

तभी उसे ख्याल आया कि उसका पड़ोसी बिज्जू बड़ा उस्ताद है। उसे जाकर यह खबर सुनाती हूँ। वह भेष बदलने में भी माहिर है। वह दौड़ी-दौड़ी बिज्जू के पास गई। दौड़ने के कारण उसकी साँस भी फूलने लगी थी। जैसे तैसे साँस को काबू में करके वह बोली- “अरे भाई बिज्जू! तुम्हें एक बढ़िया खबर सुनानी है। शहर में एक राजा की सवारी निकलने वाली है। बड़ी रौनक हो रही है वहाँ। क्या तुम उसे देखने नहीं जा रहे हो?”

बिज्जू ने आँखें मिचकाते हुए कहा - “वहाँ जाने का क्या फायदा। भीड़ में लोग मुझे घुसने ही नहीं देंगे। ऊपर से डण्डे भी पड़ सकते हैं। मैं तो यहीं भला।”

बटेर उसकी मरी-मरी-सी बातें सुनकर निराश हो गई। पर तभी उत्साह से बोली- “सुनो! मेरे पास एक उपाय है। हम दोनों आराम से राजा की सवारी देख सकेंगे।” बिज्जू मन ही मन तो सवारी देखना चाहता था लेकिन ऊपर से उत्साह नहीं दिखा रहा था। बोला- “मैं भी सुनूँ। ऐसा कौन-सा उपाय है तुम्हारे पास।”

बटेर उसके कुछ नज़दीक आकर बोली- “तुम तो भेष बदलने में माहिर हो। ऐसा करो तुम वहाँ सड़क किनारे घास-फूस के ढेर के समान ऊँचे होकर खड़े हो जाना। तुम्हारी तरफ किसी का ध्यान ही नहीं जाएगा। और तब तुम आराम से राजा की सवारी देख सकोगे।”

बिज्जू को लगा कि यह तो बड़ा ही आसान-सा उपाय है। वह सड़क किनारे घास फूस का ऊँचा-लम्बा-सा ढेर बन कर खड़ा हो गया। बटेर को भी इसी क्षण का इंतज़ार था। वह बोली- “यदि तुम्हें एतराज़ ना हो तो मैं भी वहाँ तुम्हारे ऊपर बैठकर सवारी देख लूँ?”

बिज्जू को यह प्रस्ताव बहुत अच्छा तो नहीं लगा पर फिर सोचा-एक से भले दो। वह बोला- “ठीक है, तुम ऊपर बैठ जाना लेकिन यदि कोई खतरा हो तो मुझे पहले से बता देना ताकि मैं अपना बचाव कर सकूँ।” बटेर ने एकदम हामी मारते हुए कहा- “हाँ, हाँ क्यों नहीं। अच्छे मित्र का तो यह कर्तव्य ही है।” यह कहते हुए बटेर बिज्जू के सिर के ऊपर जाकर बैठ गई।

वहाँ ऊँचाई पर बैठते ही उसे, दूर से राजा की सवारी आती दिखाई दी, वह अपनी समझदारी पर मन ही मन खुश हो रही थी।

सवारी के आगे-आगे बैण्ड चल रहा था। उसके संगीत पर लोग नाच गा रहे थे। फिर हाथी-घोड़ों का समूह निकला। उसके पीछे राजा अपनी पालकी में बैठकर दोनों ओर खड़े लोगों को अभिवादन स्वीकार कर रहे थे। फूलों की वर्षा हो रही थी और राजा की जय-जयकार के नारे लग रहे थे।

पालकी के आगे-आगे लाल रंग की पोशक में सजे कई चोबदार भी चल रहे थे। उनका काम राजा की सुरक्षा के अलावा यह भी देखना था कि सब लोग राजा को सम्मान दे रहे हैं या नहीं। सब लोग झुक झुककर राजा का अभिवादन कर रहे थे और चोबदार अपने हाथ की बड़ी-सी लाठी घुमाते हुए आगे बढ़ रहे थे। जब जलूस बिज्जू और बटेर के पास पहुँचा तो बटेर राजा का ताम-झाम देखती रह गई और वह राजा का अभिवादन करना ही भूल गई। यह देखकर आगे-आगे चल रहे एक चोबदार को बहुत गुस्सा आया। वह बोला- “अरे देखो तो, ये बटेर कितनी घमण्डी, निर्लज्ज और ढीठ है। इसने राजा का अभिवादन भी नहीं किया। इसको सजा तो मिलनी ही चाहिए।”

ऐसा कहते हुए चोबदार ने अपनी लाठी घुमायी और बटेर को निशाना बनाते हुए ज़ोर से मार दी। उधर बटेर लाठी को देखते ही सतर्क हो गई थी। जैसे ही लाठी उसको चोट पहुँचाने वाली थी वह फुदककर एक ओर हो गई और ठाका मारकर हँसने लगी। लाठी बेचारे बिज्जू के सिर पर लगी। वह दर्द से कराह उठा।

उसे बटेर पर बहुत गुस्सा आया। वह उस पर नाराज़ होते हुए बोला- “तुमने तो कहा था कि यदि कोई खतरा होगा तो तुम मुझे पहले से ही बता दोगी ताकि मैं अपना बचाव कर सकूँ। तुम तो लाठी की मार खाने से बच गई और मुझे बिना बात पिटवा दिया। अब मैं इसका बदला लूँगा”, और यह कहते-कहते बिज्जू ने बटेर पर झपट्टा मारा और उसे अपने मुँह में भर लिया।

बेचारी बटेर चिल्लाने लगी। उसे लगा कि अब तो मौत आ गई। पर उसने हिम्मत नहीं हारी। वह रोते हुए, बिज्जू से बोली- “बिज्जू भाई! क्षमा करना। उस चोबदार ने इतना समय ही नहीं दिया कि मैं तुम्हें बता पाती।”

बिज्जू ने गुस्से से कहा- “और जब मुझे मार पड़ रही थी तो तुम्हें मज़ा आ रहा था। तब तो खूब ठहठहा कर हँस रही थी। अब मैं तुम्हें मज़ा चखाता हूँ।”

बटेर समझ गई की अब बचना मुश्किल है। फिर कुछ सोचकर वह बोली- “बिज्जू भाई! मेरी माँ बहुत बीमार है। अब तो मेरी यही आखिरी इच्छा है कि उसे मरने से पहले एक बार देख लूँ। मेहरबानी करके एक बार उसे यहाँ बुला दो।”

बिज्जू को लगा कि माँ को बुला देने में कोई हर्ज़ नहीं है तो उसने मुँह खोलकर ज़ोर से आवाज़ लगाई- “ओ बटेर की माँ... माँ...माँ...।”

माँ कहते ही उसका पूरा मुँह खुल गया और इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी करता, बटेर उसके मुँह से निकलकर भागने लगी। लेकिन बिज्जू भी चौकन्ना था। उसने भागती बटेर की दुम को कसकर पकड़ लिया। बटेर भागना चाहती थी लेकिन दुम बिज्जू

ने पकड़ रखी थी इसलिए भाग नहीं पा रही थी। उसकी जान मुसीबत में थी। बटेर ने भागने के लिये पूरी ताकत लगा दी। इस रस्साकसी में अचानक उसकी दुम टूट कर बिज्जू के मुँह में रह गई और वह

बिना दुम के ही सीधे भागती चली गई। उसने सोचा- “जान बची तो लाखों पाए। दुम चली गई तो क्या, जान तो बच गई।” और इस तरह तब से आज तक बटेर बिना दुम की हो गई। ■

“प्रकाश मंत्र”

- सुनील शर्मा

जीवन तम में प्रकाश मंत्र फूंक गया है कोई।
जाग्रत हो ज्ञान तिमिर में आत्मा है सोई।।

ओढ़ लिए हैं क्यों अकारण
मोह माया के बाह्यावरण
है पिस रही वो कनक भांति
सुप्त व लुप्त हो गई है कांति
न धकेल स्वयं को अग्निकुंड में
जाग्रत हो जाग्रत हो

जीवन तम में प्रकाश मंत्र फूंक गया है कोई।
जाग्रत हो ज्ञान तिमिर में आत्मा है सोई।।

आई थी तू विश्व में लेकर नया संदेश
क्यों किया धूमिल स्वयं को देख नया परिवेश
स्वयं न बदल देख कर विश्व की यह धारा
स्वनिर्माण का दृढ़ बल लाएगा परिवर्तन सारा
न धकेल स्वयं को दौर्बल्य में
जाग्रत हो जाग्रत हो

जीवन तम में प्रकाश मंत्र फूंक गया है कोई।
जाग्रत हो ज्ञान तिमिर में आत्मा है सोई।।

मंत्र है वशीभूत कर ले मन यह चंचल
ज्ञान मार्ग पर अडिग निर्भीक बढ़े चल
सत्य मार्ग की कठिनाइयों से न डर तू
पाएगी इक दिन अपना लक्ष्य निकट तू
न धकेल स्वयं को अस्मिता में
जाग्रत हो जाग्रत हो

जीवन तम में प्रकाश मंत्र फूंक गया है कोई।
जाग्रत हो ज्ञान तिमिर में आत्मा है सोई।।

- नीलम मलकानिया

यहाँ जापान में कहीं भी चले जाओ लगभग हर एक किलोमीटर पर कोई ना कोई नदी आ ही जाती है। मुझे नदी किनारे टहलना पसंद है ऐसा लगता है कि बहता पानी चुपचाप आपसे कुछ कहना चाहता हो। कई बार मन करता है कि नदी से पूछा जाए कि आज तुमने क्या-क्या देखा? क्या अच्छा लगा? जिस दिन मैं बहती हूँ खुद को नदी मान लेती हूँ और अपने प्रवाह में बहुत कुछ जोड़ने की कोशिश करती हूँ जो आने वाले कुछ समय तक ड्राईगरूम में की गई नई सजावट जैसा मन पर दमकता रहता है और ऊर्जा देता है। नदी से पूछना चाहती हूँ कि क्या बहते-बहते तुम कहीं ठहरना चाहती हो? क्या देखना चाहती हो पल भर रुककर? क्या तुम्हारी सहज प्रवृत्ति से उलट किया गया कोई काम तुम में भी कुछ जोड़ सकता है? बस ऐसे ही कुछ बेतुके से विचारों में खोई घर के पास वाली नदी के किनारे टहल रही थी तभी वो मिली मुझे। वो, एक छोटा सा हल्के पीले रंग का कढ़ाई वाला फ्रॉक पहने और लगभग पाँच इंच की हील वाले मैचिंग सैंडल, बिल्ली के डिज़ाइन वाला पर्स हाथ में झूल रहा था और उसके खूबसूरत चेहरे पर कुछ तैर रहा था। अब नदी लड़की बन गई थी और मेरा ध्यान उस पर चला गया। अब बहते पानी को नहीं बल्कि उसे देख रही थी। वो भी बह रही थी, अपने विचारों में। खोई सी चली जा रही थी। चेहरे पर मेकअप सजाए, बड़ी-बड़ी काली घनी पलकें लगाए और गालों के बाहरी हिस्सों पर लाल ब्लशर लगाए ताकि जब वो हँसे तो उसके चेहरे के दोनों तरफ उभरी नन्हीं गुलाबी उठान से वो सुंदर ही नहीं बल्कि तंदुरुस्त भी लगे। जैसे भारत में बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि बच्चा हँसता है तो शरीर में लगता है। यानी अगर बच्चा खुश है तो तंदुरुस्त भी रहेगा और खाया पिया शरीर में लगता रहेगा। गाल गुलाबी हो जाएँ तो समझो कि शरीर में खून का दौरा अच्छा हो रहा है। ये सोच कर पल भर को मैं मुस्कुरा दी कि खून और सेहत का ये रिश्ता, गुलाबी गाल और देहाती बुजुर्गों का ये समीकरण कैसे मेकअप की एक छोटी सी गोल डिबिया और एक ब्रश में समा गया है। हिमोग्लोबिन चाहे जितना भी हो, ब्रश चलाओ और गाल गुलाबी बनाओ। ये सब सोच ही रही थी कि वो मेरे पास से गुज़री और उसी पल मेकअप से बड़ी बनाई गई उसकी आँखों से छलकते आँसू मैंने देख लिए। एक नया देश, अजनबी लोग, आस-पास कोई तीसरा व्यक्ति नहीं और फिर भाषाई बाधा। सहज बुद्धि ने कहा कि मैं बस खामोश रहूँ और उसे ऐसे ही जाने दूँ। फिर अंदर जो एक कलम रहती है वो सहसा जाग उठी। ... क्या है इन आँसुओं की कहानी ... क्यों रो रही है ये ... ज़ाहिर है कि सब ठीक तो नहीं है ... सहज बुद्धि --- प्यार व्यार और क्या। तोक्यो जैसी अत्याधुनिक जगह में तो ये मामूली बात है। लोग अकेलेपन का शिकार हैं। कोई भी समस्या हो सकती है। कलम— फिर भी क्या ये इंसानियत है कि वो लाचार सी, रोती हुई चली जाए और उसे ये भी अहसास ना करवाया जाए कि इस पल ये नदी और मैं उसके आँसुओं से पसीज रहे हैं। बुद्धि--- हो सकता है उसे अच्छा ना लगे। उसकी मर्ज़ी है, जब चाहे रो सकती है। कलम --- जब चाहे हँस भी तो सकती है। रोने से क्या होगा ? क्या परीकथा हमेशा परी से ही बनती है ?

क्या किसी अंजान के चेहरे पर मुस्कुराहट ला देना या उसे ये अहसास करवा देना कि उसका होना भी इस ब्रह्माण्ड में किसी कोने का आरक्षित होना है , परीकथा नहीं है ? कुछ सोच कर उसे आवाज़ लगाई....“सुमिमासेन...”। जापानी में excuse me या sorry को सुमिमासेन कहा जाता है। वो रुकी। पीछे मुड़कर देखा। मैं बिना बोले चेहरे पर हल्की मुस्कान और एक परिचित ऊर्जा लिए उसकी ओर बढ़ी। उसका इस तरह रुक जाना और फिर पीछे देखना। ठीक मेरी आँखों में देखना और अपने आँसू छिपाने की कोई कोशिश ना करना इस बात का संकेत था कि मैं इस शरीर से पहले ही अपने विचारों से उस तक पहुँच गई थी और अब हम अजनबी नहीं रहे थे। “सुमिमासेन... व्हाई आर यू क्राईंग.. व्हाट हैपेन्ड... इफ यू फील कम्फर्टेबल , यू कैन शेयर इट विद मी” । ... मैंने धीरे-धीरे अपने शब्दों और इशारों से उसे ये बता दिया कि वो जो कहना चाहती है, कह सकती है क्योंकि कोई है जो इस पल उसे सुनना चाहता है। उसने कुछ पल मुझे देखा फिर कहा ... “सो काइंड ऑफ यू, आरीगातो”। ... आरीगातो यानी धन्यवाद। मुझे लगा था कि वो कुछ और बोले बिना बस यही शब्द मेरे हवाले करके चली जाएगी। जापानी समाज में लोग शर्मिले और साथ ही थोड़े औपचारिकता पसंद होते हैं। संकोची स्वभाव भी कई बार आड़े आता है। उसने मुझे चौंकाते हुए पूछा “कैन वी सिट देयर, देयर ऑन द बैंच”? “ओह यस, कम... वुड यू लाईक टू हैव वॉटर”? मैंने पूछा। ... उसने गर्दन हिला कर मना किया और फिर मुस्कुराने की कोशिश करने लगी। फिर से वही शब्द धीरे से दोहराया , “आरीगातो”। वो हिन्दी नहीं बोल सकती थी और मैं जापानी नहीं जानती थी। तो बची अंग्रेज़ी। उसी भाषा में दुख-दर्द और दिलासे का आदान-प्रदान हुआ। बैंच पर बैठते ही मैंने उसका नाम पूछना चाहा तो उसने फिर से आँसू लुढ़काते हुए नाम बताया ‘ बैड गर्ल’। फिर एक दो बार यही शब्द दोहराया। मैं समझ गई कि ये उपाधि किसी खास की दी हुई



है और संभव है कि जापानी भाषा में वो शब्द कुछ ज्यादा ही "बेड" रहा हो इसीलिए ये इतनी दुखी हुई। ये मुलाकात नाटकीय तो बन ही गई थी तो मैंने भी फिर बिना किसी लाग लपेट के पूछ ही लिया ... "ब्रेकअप"? वो फीकी मुस्कराहट के साथ बोली.. "नो, पैचअप"। ... पैचअप... यानी कि बिछड़े साथी से फिर से मिलना। तो इसमें रोने की क्या बात?... बिना कुछ पूछे सिर्फ उसके बोलने का इंतजार करती रही और इस उधेड़बुन में रही कि उससे क्या कितना पूछा जाए ताकि वो असहज महसूस ना करे। ये बिल्कुल अलग अनुभव था और थोड़ा सा अविश्वसनीय भी क्योंकि यहाँ जापान में अक्सर इस तरह किसी का भी बतियाने लगना बहुत अनोखी बात है। पर मेरे साथ भी अनोखा तो घटता ही रहता है तो ये एक कड़ी भी जुड़ गई। उसने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ से हूँ और फिर खुद ही कहा, इंडिया ? फिर थोड़ी सी औपचारिकता के बाद नमस्ते और सारी (साड़ी) शब्द से अपना परिचय बताने के बाद जो कहानी सुनाई वो कुछ इस तरह थी। ..वो तोरियामा या तारायामा जगह से थी शायद और यहाँ तोक्यो में किसी कंपनी में काम करती है। इलैक्ट्रॉनिक्स की कंपनी है इसलिए उसने अंग्रेज़ी सीखी ताकी बाहरी लोगों से बातचीत की जा सके। उसका दो साल पहले ब्रेकअप हुआ था क्योंकि जितना समय वो दोनों एक साथ बिताना चाहते थे उतना समय उनके पास था ही नहीं और फिर इसी के साथ कुछ और बातों पर भी मनमुटाव शुरू हुआ। एक दिन लड़की को अहसास हुआ कि इस तरह हर समय नाराज़ रहना और एक दूसरे को सिर्फ ढोते रहने से अच्छा है कि अलग हो जाएँ। दोनों ने साथ बैठकर ये फैसला किया, फिर वो अलग हो गए और अपने-अपने रास्ते अपना-अपना दिल थामे चल दिए। फिल्मी कहानी की तरह फिर एक दूसरे की याद आने लगी। लड़की ने अपने शौक से जी बहलाना चाहा और किसी डॉस क्लास में जाना शुरू कर दिया। खुश रहने लगी। कुछ अलग कर रही थी और कंपनी के एक साथी को थोड़ा पसंद भी करने लगी थी। कंपनी के ही काम से अमरीका जाने का सपना भी पालना शुरू कर दिया था और उसके लिए मेहनत भी कर रही थी। यू टर्न लेकर लड़का फिर उसके जीवन में आना चाहता था और परेशान रहते हुए कभी-कभी अपना मानसिक संतुलन खो बैठता था । लड़के के ऑफिस में लोग उससे नाराज़ रहने लगे और उसके काम पर भी असर पड़ने लगा जो कि जापान में एक खतरनाक बात है क्योंकि बहुत सी जगह ऐसी हैं जहाँ आप अपने काम को चाहे पूरी निष्ठा से करें या मजबूरी में करें, पर आपके काम का स्तर ज़रा खराब हुआ कि आपको दूसरा मौका कभी नहीं मिलता। अपने हालात को सुधारने की कोशिश में लड़का फिर से लौट आया उसके जीवन में और वो जो उड़ना चाहती थी, फिर से एक ऐसे रिश्ते में कैद हो रही थी जिसका आधार डॉवाडोल था। अब शायद डॉस क्लास और

अमरीका कुछ भी नहीं। शायद कुछ समय बाद फिर से वही व्यस्तता और वही मानसिक दबाव। उसने सधे हुए और गरिमामय शब्दों में ये कहानी बताई और जो नहीं बताया वो उसके आँसू बता ही चुके थे। शायद वो मन से इस रिश्ते के लिए तैयार नहीं थी और इसे बस एक दबाव या हालात कहा जाना ही सही था। उसने अपना नाम बताया था और मैंने दो बार दोहराया भी पर अब भूल चुकी हूँ। वो कहाँ से आ रही है, क्या उसी से मिलकर, क्या वो साथ रहते हैं, आगे क्या चाहती है, क्या फिर कोई झगड़ा हुआ था, क्या इस बार कुछ बदला है उन दोनों के बीच, गुड़िया सी लगने वाली लड़की बैड गर्ल क्यों हैं ? ऐसे अनगिनत सवाल मन में पैदा होते रहे और मैं उसे जाते हुए देखती रही। उसे एक अजनबी की ज़रूरत थी शायद उस समय। ऐसा अजनबी जिससे वो बातें कर सकें कुछ देर। जिसके सामने कुछ भी कह सके और ये डर ना हो कि कॉमन फ्रेंड बातों को पंख लगाकर उड़ा देंगे। उसके चले जाने के बाद फिर से बहुत देर तक मैं अपने ही मन में गोते लगाती रही। बिना कोई तथ्यात्मक जानकारी दिए उसका यूँ अपनी बातें कह जाना दिल को छू गया। वो बस बोलना चाहती थी, मेरे बहाने शायद अपने आप से बात कर रही थी। दोहरा रही थी बहुत कुछ। शायद कई बार घुटन के घेरे से निकलने का बस यही सबसे आसान तरीका होता है, अपनी बात बोल देना। फिर चाहे कुछ समाधान निकले आपकी समस्या का या नहीं। वैसे ज्यादातर तो हम खुद ही सुलझाते हैं अपनी उलझनें, सलाह देने वाले बस कुछ विकल्प हमारी झोली में डाल देते हैं। कौन सी परेशानी जीवन के कितने दिन निगल जाएगी ये भी कुछ हद तक हम ही तय करते हैं। इसीलिए शायद वो समाधान तो खुद तलाशना चाहती थी लेकिन उस विशेष पल की ज़रूरत बस बात करना थी , तो उसने एक अजनबी से बात कर ली। यहाँ कुछ दोस्त ऐसे ही मिले हैं मुझे, अचानक। अब उनका फोन नंबर है मेरे पास और जब तब बातें भी होती रहती हैं। पर उनके बारे में कुछ लिखा नहीं। ये लड़की इतनी जल्दी कागज़ पर उतर जाएगी पता नहीं था। अगर फोन नंबरस या नेम कार्ड की अदला-बदली हुई होती तो शायद एक प्रक्रिया शुरू हो जाती और इसके बारे में भी कुछ ना लिख पाती। पर इससे तो दोबारा मिलने की कोई उम्मीद नहीं, कोई अता-पता नहीं। वो चुपचाप चली जा रही थी, फिर से अपना झूलता पर्स संभाले और खुद को समेटते हुए। वो थोड़ी सी मुझ में बच गई थी और थोड़ी सी उस नदी में। नदी और मैं दोनों ठहर गए थे और बस बहे जा रही थी 'वो'। चाहती हूँ कि वो खुश रहे, क्या पता कल फिर से हम कहीं ऐसे ही अचानक मिल जाएँ। तब तक बस मैं उसे ऐसे ही याद रखना चाहती हूँ, इसी शब्द से 'वो'। ■

कुछ कहना चाहता है मन...

- सारिका अग्रवाल

ख़ाब

वो कदम बढ़ते रहे उन
ऊँची ऊँची दिवारों की तरफ,
कहीं खिड़की से एक रोशनी की
किरण पर हम बढ़ चले....
विशालकाय उस कक्ष को
देखकर कुछ सिमटे,
फिर नज़र पड़ी उन नौजवानों पर,
हुए तल्लीन थे जो खेल में
बढ़ी लगन से....
नतमस्तक हो गया सर
उनका यह परिश्रम देखकर,
क्यों ना हो इस देश का गौरव
यह बच्चे...
फिर उठे कदम और बढ़ने लगे
अपने ही ख्यालों में....
छोड़ आये थे अपना देश पीछे,
पर आज भी थिड़कती हैं यादें,
एक नया ख़ाब सजा लिया उन
कुछ पलों में....
मात्रभूमी के उन नौजवानों के लिये,
जो हमारे देश को भी
गौरवानवित करेंगे कभी...
कुछ ऐसे ही खेल परिक्षण मैदान होंगे,
हर खेल की शिक्षा जहाँ सम्भव होगी,
मेहनत की हर दिल को तमन्ना होगी,
क्यों ना होगा मेरा देश भी उस शिखर पर....
जहाँ नतमस्तक हर देश होगा!!

बढ़ते रहो

कुछ खराब लम्हों को अपने
दिल से लगा कर क्या करोगे....
जो कुछ अच्छा हुआ उसे क्या
भूल जाओगे....
ज़िंदगी में बढ़ते रहोगे तो
मंज़िल पा जाओगे....
रुक गया कदम अगर तो
बहुत पीछे रह जाओगे।

आँसू

तुमसे क्या बोलूँ सखी....
और तुम्हें क्या समझाऊँ
बस कुछ आँसू पलकों पर ले आऊँ....
यह आप बीती गहरी इतनी....
कुछ क्षण मौन हो जाऊँ....
यह सोचूँ इन बेबस टपकते
हुए आँसुओं को कैसे रोऊँ...
तुम्हें पूछूँ या खुद को पूछूँ....

रिश्ते

वो टूटते, वो सड़ते, वो रोंदे हुए रिश्ते,
वो घिसटते हुए ज़मीन पर
लहलुहान हुए रिश्ते
वो दिलों को चीरते,
वो बिलखते, वो सिसकते
वो हैवान से यह रिश्ते
वो समाज की बंदिशों में घिरे हुए
वो डरते, सिमटते वो हारे हुए से रिश्ते,
फिर भी रिश्ते कैसे
कैसे हैं यह रिश्ते।

वो यादें

बहुत कुछ लिखना चाहता था मन
उन कोरे कागज़ों पर,
पर समझ नहीं आया अपने
जज़बानों को कैसे शब्द दें....
बहुत सिमटे थे उन यादों में,
पर समझ नहीं आया उन्हें
कैसे वर्तमान दें....
दिल बहुत उदास था,
कि अपनी आवाज़ को पहचान
पाना भी मुश्किल था....
एक आवरण इतना गहरा था जीवन पर,
कि अपना जीवन भी बोझ था ज़िंदगी पर।

कवि मन्सूर की कलम से-

तेरी मुस्कराहट

फूल तो खिलते हैं मुरझा जाते हैं,
मगर हर पल खिलखिलाती है तेरी मुस्कराहट।

नींद नहीं जब आती है लंबी काली रातों में,
एक मीठी लोरी सी सुनाती है तेरी मुस्कराहट।

इन्तहां नफरत का मारा हो गर कोई,
प्यार भी सिखा देती है तेरी मुस्कराहट।

पोंछ दो अब आँसुओं को और पुकार लो बहार को,
हर वक्त ये एहसास दिलाती है तेरी मुस्कराहट।

हम तो आ चुके थे सनम मौत के कगार पर,
गर ना वापस बुलाती ये तेरी मुस्कराहट।

इस जन्म में ही नहीं हर जन्म में,
साथ निभायेगी ये तेरी मुस्कराहट।

गज़ल

हाले दिल यूँ ब्यान नहीं होता,
कभी मैं सुबह तू शाम नहीं होता।

खुशी मेरे नसीब की जाने कहाँ है,
जहाँ जाऊँ गम जुदा नहीं होता।

दिन और रात अब बराबर हैं मेरे लिये,
कोई ऐसी रात नहीं जब मैं जगा नहीं होता।

आज तू खुश है तेरे पास है वो,
कल समझेगी कोई सदा नहीं होता।

हर शय दौलत के कब्जे में इस कदर,
गरीब का तो अब खुदा भी नहीं होता।

खुदा की बंदगी से जन्नत मिले शायद,
वो जन्नत ही क्या जहाँ तू नहीं होता।

रुबाई

मैं जानता हूँ तेरे नैनों की प्यास
कुछ कहने को बेताब है,
मगर क्या करूँ की दिल पर जख्म इस तरह बेहिसाब है,
कि दिल कहता है कि इस दर्द का नहीं कोई सदबाब है,
फिर भी सोचता हूँ मैं, ऐ मेरी हमनफज़
अगर कोई इलाज़ है, तो वो तू है सिर्फ तू है,
और तू लाज़वाब है।।

मेरा शौक - घुड़सवारी

- शुन निशिमोतो, कक्षा 5



वैसे तो मेरे बहुत से शौक हैं, पर मुझे घुड़सवारी करना बहुत पसंद है। मैं केवल घुड़सवारी ही नहीं करता, बल्कि उनकी देखभाल भी करता हूँ। उन्हें खाना खिलाता हूँ, उनका घर साफ करता हूँ। जब मैं घोड़े की सेवा करता हूँ, मैं उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करता हूँ। घोड़े को भगाने के लिये मैं अपने एड़ी से उसके पेट में लात मारता हूँ, और रोकने के लिये लगाम खिंचता हूँ। घोड़े घास और गाजर खाते हैं।

एक बार जब मैं एक घोड़े की कंधी कर रहा था, वह अचानक हिलकर मेरे पाँव पर चढ़ गया और मुझे बहुत दर्द हुआ। मैंने सुना है कि पुराने ज़माने में घोड़ों का जबाड़ा जुड़ा होता था इसलिए उनका चेहरा छोटा दिखता था, परंतु आजकल उनके जबाड़े जुड़े नहीं होते इसलिए उनका चेहरा लम्बे दिखते हैं। मुझे लगता है कि घास खाने के लिए जब वे अपना चेहरा नीचे करते हैं, उनका चेहरा लम्बा हो जाता है। ■

Adults are so strange

- Akanksha Mukheree, Grade IV

At times I find adults to be a bit strange. They think that they know everything about children and always say, “do this, do that”, but that is not right. We children have our own thoughts and opinions that adults need to listen to.

There are many things about adults that I quite don't understand. For example I read news about adults killing each other and fighting wars and I wonder why! If adults asked children, we would tell them to immediately stop these killings and make peace among themselves.

I find many adults smoking and drinking alcohol, which is bad for health. And then they tell children “ don't eat this or you will fall sick.” They don't let children do it. But they do it themselves.

In some schools teachers punish and hit children, which I feel is strange and not a good thing to do. I feel that adults who humiliate children are very mean and I wonder why they do it!

When children get bad scores in their exams, adults get very angry and scold them because they want children to get everything correct and not make a single mistake. But that is not right because if children don't make mistakes they won't learn anything. But adults don't understand that failing is also very important.

Adults judge people by their clothes. If a person is shabbily dressed, adults will not believe the person. But if the person is wearing a suitable outfit, adults will believe him or her.

Children know what they want. But adults just don't understand the children's feelings. So they don't get it. The children are much more active than the adults are.

That is why I find most adults so strange! ■